माइ मोहन मूरति मुरारि।
मनइते मरमे मनोरथ माधुरी मनमथ मनमथ मारि॥ ध्रुव॥
मुकुलित मगी मधुर मधु माधवी मालती मंजुलमाला।
मन्द मरन्द मुदित मत्त मधुकर मण्डित मौलिमन्दार।।
माथहिं मौर मुकुट मद मन्थर रमणीमण्डल मन मान।
मंजु मंजीर महिम महिमामय गोविंददास गुणगान॥

क्षुद्रगीत का तीसरा ध्रुवपद रूप उपर्युक्त चित्रपदा और चित्रकला के लक्षणों से मिलाजुला होता है : चित्रपाद चित्रकला लक्षण संयुक्त। ध्रुवपदागीत एइ जानो शास्त्र उक्त। इसके अलावा कुछ जानकारों का यह भी कहना है कि इसमें ध्रुव-आभोग दोनों पद होते हैं जबकि कुछ ज्ञानियों का मत है कि उद्ग्राह, ध्रुव और आभोग तीन पद होते हैं। कतिपय जनों का मत है कि इसमें ध्रुव-अंतरा और आभोग होते हैं। इस भेद के तीनों ही रूपों के उदाहरण ग्रन्थकार ने दिए हैं। मिले-जुले रूप का उदाहरण मल्हार राग में स्वयं नरहरि ने इस प्रकार दिया है-

जय जय नटनागर रससागर गिरिधारी।
सुन्दरवर वसनचौर अंजननिभ नवकिशोर,
तरुणि धृति भंजन जनरंजन गुणभारी॥ ध्रुव॥
मुरलीधर परमधीर शोभाकर वरजवीर
मन्मथ मदहर सरसिज लोचन रुचिकारी।
यमुनाजल केलिदक्ष सुतनु शयनशेज वक्ष-
मंजुल मुखचन्द्रकिरण नरहरि बलिहारी॥

इस ध्रुवपद के दूसरे उदाहरण के रूप में नरहरि का यह पद है, जो गुर्जरी राग और आदिताल में है। यह क्षुद्रगीत उद्ग्राह और ध्रुव सहित दिया गया है-

केशव कमलदलेक्षण कामद कान्त मुरान्तक कलित सुरेश।
नन्दतनुज जनरंजन भवभय, भंजन कंजचरण कमलेश॥ उदग्राह॥
जय जय गोप वधुवदनाम्बुज मत्त मधुप मकरध्वज-भूप।
पीताम्बर वर नायर रसमय मंजुल भुज दलितांजन रूप॥ ध्रुव॥
परमानन्द कन्द मधुराधर मुरलीवाद्य धुरन्धर धीर।
नरहरिमव मधुसूदन माधव गोवर्धन गोकुलवीर॥

इसी प्रकार तीसरे ध्रुव, अन्तरे का रूप इस क्षुद्रगीत में दृष्टव्य है। यह केदार राग में निबद्ध है और इसमें कहा कि हरिवल्लभ के समान संसार की कालिमा को नष्ट करने वाला और कौन हो सकता है-

देख देख सोइ मुरतिमय नेह।
कांचन कांति सुधा जिनि मधुरिम, नयन चमक भरि लेह॥ ध्रुव॥
श्यामल वरण मधुरस औषधि पुरुव यो गोकुल माह।
उपजल जगत युवती उमता लअ याक सौरभ परवाह॥
यो रस वरज गोपीकुच मण्डल मण्डल वर करि राखि।
ते भेल गौर गौड़ अव आओल प्रकट प्रेम सुरशाखी॥ अन्तरा॥
सकल भुवन सुख कीर्तन सम्पद माति रहल दिनराति।
भवदव कौन कौन कलिकल्मष यांहा हरिवगभ भांति॥

ग्रन्थ की एक अन्य पाण्डुलिपि में उदाहरण के रूप में अतिरिक्त पद भी मिलता है, जिसमें हालांकि भाषागत त्रुटियां हैं लेकिन रस और वर्णन कमजोर नहीं है।

आजु नृत्यत सरस गौरसुन्दर वरण।
रुचिर चन्दन तिलक लसत भूषण विविध
पहुपमाला चपल चारु नहि पट भरन॥
मधुर हस्तक अभंगिशोभा अतुल भुवन-
मंगल अमल ललित युगपगधरण।
प्रिय गदाधर वदन हसत अवलोकि उर
उमगि बहुरंग मृदु हसत जनमनहरण॥
चतुरवर भकत चहु ओर लिए नव यंत्र
नव गाओत सुधंग जनु अमृत लागे झरण।
कौन सखि वरणि उह राग-रागिणी सकल
भेद सुधन्या स ग्रह अंश संशयभरण॥
सरीगमपधनि सुरसप्त सुविकार बहुश्रुति
द्वाविंश अरु ग्रामत्रय दुखदरण।
स्थायी आरोह अवरोह संचारी शुभमूर्च्छना
एकविंशति कठिन संकीरण॥
विदित संगीतविद्या निपुण मंजुतर
तालपाटादि शुनि मगन जय सुरलरण।
श्यामघन प्रभुचरित छाया दश दिशि धन्य-
धन्य कलिमे यो विहरत सबहि सुखकरण॥

चतुर्थ पांचाली भेद को शास्त्रों में बहुपदा कहा गया है। क्षुद्रगीत में पांचाली को दो प्रकार की बताया है- सध्रुव और अध्रुव। हरिनायक का यही मत है। गौड़ देश में यह सुलभ पांचाली प्रसिद्ध रही है- पांचालैर्बहुभि: पादैद्विविधा सध्रुवाऽध्रुवा। संगीतसार में गीत विशारदों ने भाषान्तर गीत बताया है और बाहुल्य भय के कारण उदाहरण न देकर भाषा प्रसंग से गीत प्रकार कहा है जो क्रमश: दिव्यगीत, मानुषगीत और दोनों का मिलाजुला रूप : एवं भाषान्तरे ज्ञेयं गीत विशारदै:। इनमें संस्कृत भाषा के गीत प्रथम और जनभाषाओं के गीत द्वितीय मानुष गीत कहे जाते हैं। पांचाली का एक मानुषगीत गौड़भाषा और धानसी राग में इस प्रकार है-

कि मधुर वृन्दाविपिन शोभा। आहा मरि मुनि मानस लोभा॥
मिलियाछे तरु तरुर भाले। नाना लता तरु बेड़ाछे भाले॥
फुटियाछे फूल कतेक भांति। मधुलोभे अलि रैयाछे माति॥
शारीशुक पिकु गायचे रंगे। नाचये मयूर, मयूरी संगे॥
हंस सारसादि कालिन्दीतीरे। नाना रवे कतो कौतुके फिरे॥
चारिपाशे किवा कालिन्दीधारा। निरमल रारि काजलपारा॥
तीरे तरुशाखा परशे नीर। दोले वायु छले ना रहे धीर॥
मृग मृगीकुल कुलेते गिया। पिये वारि हेरि के धरे हिया॥
अपरूप भूमि माधुरी किये। हेन नाहि किछु उपमा दिये॥
सदा छय ऋतु सेवे ये सुखे। कि कहब नरहरि एक मुखे॥

इस प्रकार क्षुद्रगीत का वर्णन मुख्यत: भक्तिगीतों और पदों के उदाहरण लिए हैं। इससे प्रतीत होता है कि मध्यकाल में जबकि लौकिक पदों से ईश्वर की आराधना का भाव जिन रचनाओं के रूप में सामने आ रहा था, वह संकीर्तन प्रधान है और इसके लिए रचित पदादि क्षुद्रगीत के रूप में सामने आए। यूं भी कूर्मपुराण में लोकभाषाओं में संकीर्तन की परम्परा की ओर संकेत किया गया है।